International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 12, December 2017
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

मध्य प्रदेश कृषि

Dr.R.P.SONI

प्रस्तावना

मध्य प्रदेश एक कृषि प्रधान राज्य है भारत के मध्य मैं होने के कारण यह मध्य प्रदेश कहलाया प्रथम बार पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा नामकरण किया गया इसके कुछ अन्य नाम भी हैं जैसे हृदय प्रदेश, मध्य भारत, नदियों का मायका, टाइगरस्टेट, और सोया प्रदेश भी कहा जाता है स्थापना दिवस 1 नवंबर 1956 एवं पुनरू स्थापना दिवस सन 2000 में हुई यदि हम क्षेत्रफल की दृष्टि से देखें तो मध्य प्रदेश देश में दूसरे स्थान पर आता है 308252 किलोमीटर घन है जो देश के कुल क्षेत्रफल का 9.38 प्रतिशत है प्रथम स्थान पर राजस्थान और तीसरे पर महाराष्ट्र है। प्रदेश की राजधानी भोपाल और आर्थिक राजधानी इंदौर है।मध्यप्रदेश कि कुल क्रियाशील जनसंख्या का 71.52 प्रतिशत कृषिकार्य में लगा हुआ है जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार कृषि पर निर्भरता मध्य प्रदेश के लोगों की 85.6ः रही प्रदेश में कृषि क्षेत्र 147.90 लाखहेक्टेयर जो कुल क्षेत्रफल का 49ः प्रतिशत है। अगर हम मध्य प्रदेश की कृषि दर 2012–13 कृषि विकास दर 19. 85 प्रतिशत प्राप्त की गई जबकि 2013–14 में कृषि दर 24.49 प्रतिशत मापी गई और यदि हम 2016–17 मई कि विकास दर 25.81 प्रतिशत आंकी गई जो देश में सर्वाधिक है जो कि कृषि की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैयदि हम आर्थिक सर्वेक्षण की नजर से देखें तो 2015–16 के अनुसार राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का योगदान 26.23प्रतिशत हैमध्यप्रदेश में प्रतिजोतो की संख्या 73.60लाखहेक्टेयर हैयहां पर 62ः कृषि जोतोका आकार 0.5 से 2 हेक्टेयर 20.7प्रतिशतकृषि जोतों का आकार2 हेक्टेयर से 4 हेक्टेयरतथा17.3प्रतिशतकृषि जोतो का आकार 4 हेक्टेयर से अधिक है कृषि जोतों का सर्वाधिक आकार 5.6 हेक्टेयरहरदा जिले में है न्यूनतम कृषि जोतों का आकार 1.5 हेक्टेयर कटनी वह नीमच जिले में हैवर्तमानमेंमध्यप्रदेशखाद्यान्न उत्पादन देश में तीसरे स्थान पर है देश का कुल खाद्यान्न का 10.2 प्रतिशत उत्पादन मध्यप्रदेश में ही होता है।मध्यप्रदेश में सर्वाधिक सोयाबीन उत्पादित करने वालेराज्योमैं आता है यहां देश का 82.1 सोयाबीन उत्पादित किया जाता है इसी कारण मध्य प्रदेश को सोया प्रदेश की संज्ञा भी दी गई है तिलहन के उत्पादन में मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है। मध्यप्रदेश में अनाज का कुल उत्पादन 171. 77 लाखमेट्रिक टन रहा 2014–15 में

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

मौसम के आधारपर फसलों को तीन भागों में बांटा गया है –खरीफ, रबी,जायद

खरीफ की फसल–

- खरीफ की फसल जुलाईअगस्त में बोई जाती है तथा नवंबर दिसंबर में काटी जाती है।
- प्रमुख खरीफ की फसल है चावल, मक्का, बाजरा ,उड़द ,मूंग, तूवर,कपास, तिल ,मूंगफलीसोयाबीन ज्वार आदि
- खरीफ फसलों कोसयाल भी कहा जाता है

रबी की फसलें

- यह फसलें नवंबर में बोई जाती है तथा मार्च में काटी जाती हैं।
- प्रमुख फसलें हैं गेहूं चना मसूर मटर आदि।
- इन फसलों को उनालू फसल भी कहते हैं।
- ज्वार एवं अलसी रबी खरीफ दोनों में बोई जाती है।

जायद की फसलें

- यह फसलें ग्रीष्म ऋतु में पैदा की जाती हैं इसकी मोबाइल मार्च में की जाती है तथा जून–जुलाई में कटाई होती है
- प्रमुख फसलें हैं खरबूज तरबूज ककड़ी करेला आदि सब्जियां इन्हें नगदी या व्यापारिक फसलें भी कहते हैं
- कपास गन्ना जूस मिस्टर नई अफीम गांजा तंबाकू एवं सूरजमुखी आदि फसलें हैं।

  कुछ प्रमुख फसलें–

  चावल– एक खरीफ की फसल है मध्य प्रदेश में चावल का उत्पादन छठवें स्थान पर होता है पश्चिम बंगाल प्रथम उत्तर प्रदेश दूसरे तथा आंध्र प्रदेश तीसरे स्थान पर हैलाखमध्यप्रदेश में चावल की खेती 47लाखहेक्टेयर(22 प्रतिशत) भाग पर की जाती है प्रमुख चावल उत्पादक जिले बालघाट, मंडला, शेडूल, उमरिया, अनूपपुर,सीधी ,रीवा,सिंगरौली,नरसिंहपुर,होशंगाबाद आदि हैबड़वानी में धान अनुसंधान केंद्र स्थापित हैमध्यप्रदेश में बालाघाट में सर्वाधिक चावल उत्पादन किया जाता है।

  गेहूं – उत्पादन में मध्यप्रदेश का स्थान पंजाब के बाद दूसरे नंबर पर आता है मध्य प्रदेश देश के कुल गेहूं उत्पादन का 11 प्रतिशत उत्पादित करता है नर्मदा घाटीवहमालवा को गेहूं की डलिया कहा जाता हैप्रमुख गेहूं उत्पादक जिलेहोशंगाबाद,हरदा,सीहोर,विदिशा,देवास,रतलाम,मंदसौर,इंदौर,झाबुआ,जबलपुर,गुना, भोपाल ,सागर ,निमाण, ग्वालियर,सतना,रीवा, आदि जिलों में होता है सीहोर का शरबती गेहूं पूरे देश में प्रसिद्ध है मध्यप्रदेश में सोयाबीन के बाद गेहूं सर्वाधिक पैदा की जाने वाली फसल है मध्य प्रदेश में प्रति हेक्टेयर गेहूं उत्पादन (2073 किलोग्राम) है

  ज्वार–मध्यप्रदेश में गेहूं के बाद सर्वाधिक क्षेत्र पर ज्वार का उत्पादन होता हैमध्यप्रदेश में दो बार रबी खरीफ दोनों रूप में पाई जाती हैं खरीफ के रूप में ज्वार का उत्पादन उत्तर पश्चिम मध्य प्रदेश के जिले मुरैना, शिवपुरी, सहयोगपुर, गुना, भिंड, मंदसोर, तथा रतलाम में की जाती है जबकि रबी के रूप

में ज्वार का उत्पादन धार,खंडवा,खरगोन,झाबुआ,बालाघाट,छिंदवाड़ा,शिवनी आदि जिलों में होता है ज्वार के उत्पादन में मध्यप्रदेश देश के चौथे स्थान पर हैयह 8.31लाख हेक्टेयर भूमि पर बोया जाता है।

मक्का–मध्य प्रदेश में मक्का का उत्पादन उत्तर पश्चिम मध्य प्रदेश में प्रमुख रूप से किया जाता है झाबुआ,छिंदवाड़ा, धार, रतलाम,मंदसौर,शाजापुर, तथा राजगढ़ मक्का एक मुख्य खाद्यान्न फसल है जिसका उपयोग जानवरों के चारे के रूप में किया जाता है।

चना– प्रदेश की प्रमुख दलहनी फसल है मध्यप्रदेश का चना उत्पादन में देश में प्रथम स्थान है देश के कुल उत्पादन का 37 प्रतिशत चना मध्यप्रदेश में होता है चना उत्पादक जिले हैं उज्जैन, होशंगाबा, दहरदा, मंदसौर, नीमच, विदिशा, झाबुआ, देवास, रतलाम, जबलपुर,नरसिंहपुर, ग्वालियर, भिंड, मुरैना,सीहोर,रायसेन,टीकमगढ़ आदि मध्यप्रदेश में सर्वाधिक चने का उत्पादन विदिशा में होता है

सोयाबीन– मध्य प्रदेश भारत में सर्वाधिक सोयाबीन उत्पादन करने वाला राज्य है जो देश का कुल 69 प्रतिशतसोयाबीन पैदा करता है इसी कारण मध्यप्रदेश को सोया प्रदेश भी कहते हैं यह मध्य प्रदेश के समस्त पश्चिम जिला सिवनी,छिंदवाड़ा, इंदौर,धार, उज्जैन, देवास,शाजापुर,सीहोरन,रसीपुर,रतलाम भोपाल, गुना, होशंगाबाद, हरदाराय, सेनवि,दिशा आदि जिलों में होता है मध्यप्रदेश में सर्वाधिक सोयाबीनउज्जैन जिले में होता है इंदौर में राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान केंद्र स्थापित है जोकि एशिया का सबसे बड़ा सोयाबीन संयंत्र उज्जैन में है।

अरहर–मध्यप्रदेश अरहर उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर है और हर एक प्रमुख दलहनी फसल है जुलाई में बोई जाती है तथा मार्च–अप्रैल में काटी जाती है प्रमुख अरहर उत्पादक जिले हैं नरसिंहपुर,होशंगाबाद,हरदा सागर दमोह,बेतूलभिंड,धार,ग्वालियर, उज्जैन,नीमाण,देवास, इंदौर, खंडवा,रायसेन,रीवा,सतना सीधी ,सिंगरौली,शहडोल,अनूपपुर,उमरिया, आदि मध्यप्रदेश में सर्वाधिक अरहर का उत्पादन नरसिंहपुर जिले में होता है

सरसों–सरसों एक रबी की फसल है सरसों मुख्य रूप से मुरैना,शिवपुरी,श्योपुर, जिले में सर्वाधिक होती है सरसों उत्पादन में मध्यप्रदेश चौथे स्थान पर है मध्य प्रदेश का मुरैना जिला सर्वाधिक सरसों उत्पादित करता है

कपास–एक प्रमुख नकदी फसल है जिसे सफेद सोने के नाम से भी जाना जाता है मध्यप्रदेश में कपास उत्पादन में देश में पांचवा स्थान है उत्पादन जिले खंडवा,खरगोन,बड़वानी, धार, देवास, इंदौर, मंदसौर,नीमच,बुरहानपुर है मूंगफली यह खरीफ की फसल है जिसको पकने में तीन से चार माह लगते हैं प्रमुख उत्पादक जिले मंदसौर,नीमच,खरगोन,धारा,

गन्ना– एक प्रमुख व्यापारिक फसल है जिसको तैयार होने में 9 से 14 माह का समय लगता है मध्यप्रदेश के बालाघाट, उज्जैन, सीहोर, ग्वालियर, नीमाण, शाजापुर, रतलाम, नरसीपुर आदि में गन्ने का उत्पादन होता है

अलसी–उत्पादन में मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है देश की कुल अलसी का 38 प्रतिशत मध्यप्रदेश उत्पादित करता है

सनई –एक रेशेदार फसल है जो मध्यप्रदेश के श्योपुर ,मंडला ,छिंदवाड़ा, सीधी, सिंगरौली,रीवा,होशंगाबाद,बेतूल आदि जिलों में उगाई जाती है

मेसरू–एक रेशेदार फसल है गुना, भिंड, शिवपुरी,राजगढ़, तथा दीवा जिले में होती है

अफीम–असीम से एल्केलाइड प्राप्त होता है जो दवाइयों के निर्माण में काम आता है मध्यप्रदेश में अफीम उत्पादक जिले मंदसौर तथा नीमच है मध्य प्रदेश सरकार अफीम के उत्पादन पर रोक लगाने के लिए सोच रही है

गांजा–इससे नशीला एल्केलाइड प्राप्त होता है खंडवा तथा बुरहानपुर जिले में गांजे का उत्पादन किया जाता है गांजे के पौधे से निकलने वाले रस को चरस कहते हैं जिसके सेवन उत्पादन और विक्रय पर

प्रशासन का प्रतिबंध है गांजे की बिक्री से मध्य प्रदेश राज्य राज्य को लगभग 8 करोड रुपए की वार्षिक आय होती है

बाजरा–यह मोटे अनाज की प्रमुख फसल है जिसका उद्योग खाद्यान्न ने तथा पशु चारे के रूप में किया जाता है।

मूंगफली– यह उष्णकटिबंधीय पौधा है इसके लिए साधारण 75 से 150 सेंटीमीटर तक वर्षा पर्याप्त होती है 15 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस तक तापमान की आवश्यकता होती है

(चित्र स.1) कृषि फसल जलवायु क्षेत्र

क्रम सं	फसल जोन	कृषि जलवायु क्षेत्र	मिट्टी का प्रकार	वर्षा	जिले
1	चावल क्षेत्र	छत्तीसगढ़ मैदान	लाल पीली मिट्टी	120–160 सेंमी	बालाघाट
2	--□□--	छत्तीसगढ़ का उत्तर ये पर्वतीय क्षेत्र	लाल पीली मिट्टी	121–160 सेंमी	शहडोल, मंडला, डिंडोरी, अनूपपुर, उमरिया, सिंगरौली, (बेढन)
3	गेहूं चावल क्षेत्र	झडत्न पठार एवं सतपुड़ा हिल्स	मिश्रित लाल एवं काली मिट्टी	100–140 सेंमी	रीवा, सतना, पन्ना, जबलपुर, सिवनी, कटनी, सीधी
4	गेहूं क्षेत्र	मध्य नर्मदा घाटी	गहरी काली मिट्टी	120–160 सेंमी	नरसिंहपुर, होशंगाबाद, सीहोर, केवल बुधनी, तहसील, रायसेन केवल बरेली तहसील
5	--do--	विंध्य पठार	साधारण गहरी काली मिट्टी		भोपाल, सागर, दमोह, विदिशा, गुना, केबल चाचौड़ा, राघोगढ़, आरोनत हसील, सीहोरबुधनी तहसील को छोड़कर रायसेन बरेली तहसील को छोड़कर
6	गेहूं ज्वार क्षेत्र	ग्रिड क्षेत्र	जलोढ़ मृदा	80–100 सेंमी	ग्वालियर, भिंड, मुरैना, शिवपुरी, पिछोर, करीना, नरवर, खनिया ,धाना को छोड़कर गुना, चाचौड़ा, राघोगढ़, आरोन तहसील को छोड़कर
7	--do--	बुंदेलखंड क्षेत्र	मिश्रित लाल एवं काली मिट्टी	80–100 सेंमी	छतरपुर, दतिया, टीकमगढ़, शिवपुरी, केवल पिछोर करैरा नरवर खनिया धाना, तहसील
8	--do--	सतपुड़ा पठार	छीछली काली मिट्टी	100–120 सेंमी	बेतूल, छिंदवाड़ा,
9	कपास ज्वार क्षेत्र	मालवा पठार	साधारण काली मिट्टी	80–120 सेंमी	मंदसौर, नीमच, रतलाम, उज्जैन ,देवास, इंदौर, शाहजहांपुर, राजगढ़, धार, केवल धार बदनावर व सरदारपुर, तहसील झाबुआ, केवल पेटलावद तहसील
10	--do--	निमाड़ का मैदान क्षेत्र	साधारण काली मिट्टी	80–120 सेंमी	खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, बड़वानी, हरदा,धार, केवल मनावर, धर्मपुरी, गंधवानी तहसील,
11	--do--	झाबुआ का पर्वतीय क्षेत्र	साधारण काली मिट्टी	80–120 सेंमी	झाबुआ, पेटलावद तहसील को छोड़कर धार केवल, कुक्षी तहसील

मध्यप्रदेश की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी है मध्यप्रदेश में आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट 2014 15 के अनुसार वर्ष 2013 14 में शुद्ध सिंचित क्षेत्र 94.50 लाख़ हेक्टेयर जबकि वर्ष 2012 13 में 85.50 लाख़ हेक्टेयर था कुए मध्यप्रदेश में प्रमुख साधन है और यह प्रथम साधन है प्रदेश में 65ः सिंचाई को से ही होती है द्वारा सिंचाई मध्यप्रदेश में औसतन वर्षा 60 दृ 120 सेंटीमीटर होती है प्रत्येक वर्ष वर्षा के एक रुप से ना होने से यहां के

किसानों को कृषि का काफी नुकसान उठाना पड़ता है वर्षा काल में परिवर्तन भी भूखे की स्थिति पैदा कर देता ळे

मध्यप्रदेश कृषि विभाग द्वारा क्रियान्वित की जा रही विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत किसानों को दी जाने वाली सुविधाए।

आईसोपाम योजना, सघन कपास विकास योजना, सघन गन्ना विकास योजना, एकीकृत अनाज विकास कार्यक्रम (मोटा अनाज एवम चावल), अन्नपुर्णा योजना, समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन एवं उर्वरकों का संतुलित व समन्वित उपयोग कार्यक्रम (आई. एन. एम.), बलराम ताल योजना, भू–जल संवर्धन योजना, राष्ट्रीय बायोगेस योजना, राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना रू राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना अन्तर्गत रबी 2010–11, नदी घाटी/बाढ उन्मुख नदी योजना , नलकूप खनन योजना, राष्ट्रीय जलग्रहण क्षेत्र विकास कार्यक्रम, सूरजधारा योजना, मध्यप्रदेष कृषि में महिलाओं की भागीदारी (मापवा) हैंदिशानिर्देश, आत्मा योजना रू फार्म स्कूल – पुनरीक्षित दिशानिर्देषबाहरी , बैलगाड़ी योजना, बीज ग्राम योजना, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति प्रशिक्षण योजना, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, राष्ट्रीय कृषि विकास योजनारू मार्गदर्शी निर्देश प्रपत्र का प्रारूप ,संशोधन

मध्य प्रदेश प्रमुख संस्थान

संस्थान	स्थान
केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान	भोपाल
एकमात्र उद्यानिकी महाविद्यालय	मंदसौर
मवेशियों का चारा बनाने का संयंत्र	इंदौर
राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र	रतलाम
डेयरी स्टेट केंद्र परियट	जबलपुर
अंतर्राष्ट्रीय बोरलॉग मक्का एवं गेहूं अनुसंधान केंद्र	खमरिया
भारत की प्रथम जैविक खेती इकाइ	इंदौर
कपास अनुसंधान केंद्र	खरगोन
प्रदेश का पहला सैलरीच जैविक खाद संयंत्र	भोपाल
कपास अनुसंधान केंद्र	खरगोन
चावल अनुसंधान केंद्र	बड़वानी
कृषि अभियांत्रिकी अनुसंधान केंद्र	भोपाल
एशिया का सबसे बड़ा सोयाबीन कारखाना	उज्जैन
राजमाता विजया राजे सिंधिया विश्वविद्यालय	इंदौर
राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान	ग्वालियर
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय	जबलपुर
कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय	जबलपुर

- मध्यप्रदेश में बीज फार्म निगम की स्थापना 1980 में की गइ
- मध्य प्रदेश में दूध उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए वर्ष 1997 में विश्व बैंक के सहयोग से एकीकृत डेयरी विकास परियोजना प्रारंभ की गई ह
- मध्यप्रदेश में अमूल पद्धति पर डेयरी विकास के लिए वर्तमान में ऑपरेशन फ्लड पर तीन परियोजना भी श्री अंकित की जा रही है

- महिला कृषकों के लिए भी मध्य प्रदेश में कई योजनाएं चलाई जा रही हैं जिसमें से महिलाओं को बढ़ावा देने तथा उन्हें कुशल कृषक बनाने के उद्देश्य डेनमार्क की सहायता से प्रदेश में महिला कृषकों की परी शिक्षण की एक योजना बनाई गई ह
- मध्यप्रदेश में चीनी के 11

मध्य प्रदेश सिंचाई– मध्यप्रदेश की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी है मध्यप्रदेश में आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट 2014 15 के अनुसार वर्ष 2013 14 में शुद्ध सिंचित क्षेत्र 94.50 लाख़ हेक्टेयर जबकि वर्ष 2012–13 में 85.50 लाख़ हेक्टेयर था कुए मध्यप्रदेश में प्रमुख साधन है और यह प्रथम साधन है प्रदेश में 65ः सिंचाई कुए से ही होती है मध्य प्रदेश में तालाब सिंचाई का प्रमुख साधन है क्योंकि मध्य प्रदेश के अधिकांश भूमि असमतल है जिसके कारण सभी जगह मध्य प्रदेश के अधिकांश तालाबों का निर्माण छोटी–छोटी नदियों पर कच्चे बांध बनाकर किया गया नहर की खुदाई नहीं हो सकती जबकि तालाब के लिए सिर्फ गड्ढों की आवश्यकता होती है तालाब प्रदेश की सिंचाई का प्रमुख साधन है बेनगंगा नहर यह बैनगंगा नदी से निकलती है यह लगभग 39 किलोमीटर लंबी है और इसकी दो शाखाएं हैं 35 किलोमीटर लंबी है इसके द्वारा मध्यप्रदेश के बालाघाट और महाराष्ट्र के भंडारा जिले में लगभग 4000 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई होती है मध्य प्रदेश नदियों की जल भंडारण क्षमता 12,5777 करोड़ घनमीटर है 65ः सिंचाई कुए 17 प्रतिशत नहर से सिंचाई की जाती है 2ः तालाबों से और शेष भाग्य अन्य साधनों से की जाती है वर्षा द्वारा सिंचाई मध्यप्रदेश में औसतन वर्षा 60 दृ 120 सेंटीमीटर होती है प्रत्येक वर्ष वर्षा के एक रुप से ना होने से यहां के किसानों को कृषि का काफी नुकसान उठाना पड़ता है वर्षा काल में परिवर्तन भी भूखे की स्थिति पैदा कर देता है मध्य प्रदेश का सबसे कम सिंचित जिलों में प्रथम नाम डोर का आता है जिसकी सिंचाई क्षमता 0.4ः है जबकि झाबुआ 1.9 प्रतिशत सिंचाई क्षमता के साथ दूसरे स्थान पर है

जनसंख्या मध्य प्रदेश की कुल जनसंख्या 72,62,6809 तथा पुरुषों की संख्या 37612306 जो कि 51.8ः है वही हम अगर महिलाओं की जनसंख्या की बात करें तो 35014503 यह 48.2ः है जनसंख्या वृद्धि दर 2011 के अनुसार 20.30ः रहा ग्राम जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 72.4ः और शहरी जनसंख्या 27.6ः

प्रदेश पशु गणना मध्यप्रदेश में पशुधन की संख्या पशुगणना 2007 में 4.07 करोड़ थी वहीं 19वीं पशुगणना 2012 में यह संख्या घटकर 3.63 करोड़ रह गई 2003 के अनुसार प्रदेश की रीवा तथा टीकमगढ़ जिले पशु घनत्व की दृष्टि से प्रथम स्थान पर हैमध्य प्रदेश पशु जनगणना 2003 के अनुसार मध्यप्रदेश में सर्वाधिक संख्या बकरियों की है कुत्ते जनगणना के अनुसार प्रदेश में 81.4200000 बकरी बकरियां है

किसानों की खुदकुशी हैप्पीनेस मंत्रालय वहां किसान दुखी क्यों देश में मध्यप्रदेश ही ऐसा राज्य है जहां हैप्पीनेस मंत्रालय मतलब आनंद मंत्रालय बनाया गया है मध्य प्रदेश महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 में उत्कृष्ट कार्य के लिए 10 वें राष्ट्रीय पुरस्कार भी जीत चुका है लेकिन पिछले माह जून 2017 के आंकड़े सभी को चौक आते हैं जहां जून में 50 से अधिक किसानों ने आत्महत्या कर ली इसी राज्य के चार बार कृषि कर्मण अवार्ड मिल चुके हैं सरकार का मध्यप्रदेश में किसान आंदोलन के बीच 8 जून से अब तक किसानों की खुदकुशी की सबसे अधिक घटनाएं हुई नीमच मंडोर के बाद छतरपुर सागर छिंदवाड़ा होशंगाबाद सीहोर आदि जिलों में ऐसी खबरें मिली मध्य प्रदेश में जून 2017 के आंकड़े सभी को जोड़ते हैं एक रिपोर्ट के मुताबिक जून में 50 से अधिक किसानों ने आत्महत्या कर ली जहां मध्य प्रदेश कृषि में उत्तम है उसी मध्यप्रदेश में किसानों की खुदकुशी की भी कमी नहीं है वह उसमे में महाराष्ट्र कर्नाटक और तेलंगाना के बाद चौथे स्थान पर आता है मध्य प्रदेश में 1290 किसानों ने आत्महत्या की यह आंकड़ा 2015 का है मध्यप्रदेश के नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह दावा कर चुके हैं कि जून माह की शुरुआत में अब तक 40 से ज्यादा किसान आत्महत्या कर चुके

हैं लेकिन राज्य सरकार किसान के प्रति संवेदनशील बन गई हैं दावा है कि आने वाले वर्षों में कृषि को लाभ का धंधा बनाएंगे और यह प्रगति करेगी

सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी कोर्ट ने किसानों के कर्ज पर कहा कि यदि किसी भी किसान को लोन दिया जाता है तो पहले उसका फसल बीमा होता है फिर किसान लोन डिफॉल्टर कैसे हो सकता है यदि फसल बर्बाद हो गई है तो लोन चुकाने का जिम्मा बीमा कंपनियों का होता है

सन्दर्भ

1.भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) भोपाल दृ नबीबाग

2. भारतीय कृषि अनुसंधान

3. किसान कल्याण विभाग

4.http://www.mp.gov.in/web/guest/krishi/agricultural-schemes

5. http://mpkrishi.mp.gov.in/hindisite/suvidhaye_New.aspx